Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 05, May- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

प्रेमचन्द के साहित्य की आधुनिक परिवेश में सार्थकता

श्रीमती जीतबाला
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय, हिसार

सारांश

उपन्यास सम्राट के नाम से विख्यात मुंशी प्रेमचंद जी विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। वे एक सजग एवं युगचेता साहित्यकार थे। उन्होंने हिंदी साहित्य को जन-जन का साहित्य बनाने में अविस्मरणीय योगदान दिया। प्रेमचंद जी जमीन से जुड़े हुए व्यक्ति थे। उन्होंने जनसाधारण की विशेषकर ग्रामीण क्षेत्र में व्याप्त समस्याओं को प्रत्यक्ष रूप से देखा था। उनके जीवन काल के समय हमारा देश दासता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। उस समय प्रशासनिक परतंत्रता के साथ-साथ हमारे देश की प्रजा मानसिक रूप से भी गुलाम हो चुकी थी, इसलिए उत्कृष्ट विचारों, परम्पराओं व उत्कृष्ट समाज की कल्पना करना भी अनुपयुक्त होगा। समाज में जातिगत भेदभाव, सांप्रदायिकता, भ्रष्टाचार, शोषण, अनमेल विवाह व दहेज प्रथा जैसी अनेक समस्याएं व्याप्त थी। प्रेमचंद जी इन समस्याओं से ग्रस्त समाज की पीड़ा से परिचित थे, इसलिए अपने साहित्य के माध्यम से वे जनसाधारण को जागरूक करके इन समस्याओं का निराकरण करना चाहते थे। उनका संपूर्ण साहित्य राष्ट्रीयता व समाज सुधार की भावना से परिपूर्ण है। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से तत्कालीन समाज में किसानों की दुर्दशा, नारियों की वेदना व शोषकों के अत्याचारों का सजीव चित्रण किया है। वर्तमान में हमारा देश स्वतंत्र है व दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्रात्मक देश के रूप में जाना जाता है। संविधान द्वारा देश के सभी नागरिकों को मौलिक अधिकार प्रदान किए गए हैं,परंतु फिर भी प्रेमचंद युगीन समाज में व्याप्त अनेक समस्याएं जैसे-दहेज प्रथा, भ्रष्टाचार, शोषण, धर्म, लिंग, जाति के

आधार पर भेदभाव, सदोष शिक्षा पद्धति, आदि वर्तमान समाज में भी ज्यों की त्यों विद्यमान हैं व देश की प्रगति में बाधक हैं।

कुंजी शब्द – साहित्य, समस्या, आधुनिक, समाज, प्रवृत्ति।

समय के साथ-साथ समाज की विचारधारा, जीवन के प्रति दृष्टिकोण, मानवीय मूल्य, आवश्यकताएं सब परिवर्तित होते हैं, परंतु विगत कुछ दशकों में यह परिवर्तन बड़े स्तर पर व तीव्रता के साथ हुआ है, इसलिए साहित्य का मूल्यांकन भी वर्तमान संदर्भ में नवीन जीवन दृष्टि के अनुसार किया जाता है। अतः यह देखना अति आवश्यक हो जाता है कि पूर्व में रचित रचना वर्तमान मूल्यों से भी जुड़ी हुई हो, यदि ऐसा नहीं होता है तो वह कृति महत्वहीन हो जाती है। निस्संदेह प्रेमचंद युगीन समाज आज के समाज से बिल्कुल भिन्न् था। उनका संपूर्ण साहित्य परतंत्रता के समय रचा गया परंतु उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से समाज में व्याप्त कुछ ऐसी समस्याओं को उठाया है जो आज से लगभग एक शताब्दी पूर्व भी समाज को खोखला कर रही थी और वर्तमान में भी निश्चित रूप से देश की प्रगति में बाधक है। "जिन विषमताओं से प्रेमचंद अपने साहित्य में जूझते रहे उनमें से केवल ब्रिटिश शासन ही हमारे बीच मौजूद नहीं है, शेष सब तो किसी न किसी रूप में वैसी की वैसी मौजूद हैं, जिन समस्याओं पर से प्रेमचंद ने पर्दा उठाया था आज उनका रूप पहले से भी अधिक घिनौना और भयावह होकर सामने आ रहा है।"[1]

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 05, May- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

किसी भी राष्ट्र की प्रगति व उत्थान की बुनियाद शिक्षा होती है इसलिए यह आवश्यक है कि शिक्षा पद्धति व्यावहारिक व रोजगारोन्मुख हो ताकि एक सुदृढ़ राष्ट्र रुपी भवन का निर्माण हो सके। हमारी प्राचीन शिक्षा पद्धति अत्यधिक उत्कृष्ट थी। नालंदा और तक्षशिला जैसे विश्व प्रसिद्ध विश्वविद्यालयो में विद्यार्थियों को धर्म, न्याय, ज्योतिष दर्शन आदि अनेक विषयों से संबंधित शिक्षा कर्मठ विद्वान गुरुओं के द्वारा दी जाती थी। इस शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थी के चरित्र निर्माण के साथ-साथ उसका सर्वांगीण विकास करना था ताकि वह जीवन में आने वाले संघर्षों व कठिनाइयों का साहस के साथ सामना कर सके व उनका समाधान करने में सक्षम हो सके। सभी विद्यार्थी समाज की भौतिकता व ऐशो-आराम से दूर गुरु के सानिध्य में रहकर शिक्षा ग्रहण करते थे। गुरु शिष्य का संबंध भावनात्मक होता था। शिष्यों के मन में गुरु के प्रति अत्यधिक आदर व सम्मान का भाव था। एकलव्य का गुरु के प्रति आदर व समर्पण का भाव विश्व विदित है। अमीरी या गरीबी के आधार पर किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जाता था। सभी विद्यार्थी समानता के आधार पर जीवन व्यतीत करते थे व आश्रम के नियमों का पालन करते थे, जिससे जीवन के लिए अत्यधिक आवश्यक विनम्रता, अनुशासन व कर्तव्यपरायणता जैसे गुण उनमें स्वतः ही विकसित हो जाते थे परंतु वर्तमान शिक्षा पद्धति पूरी तरह परिवर्तित हो चुकी है। यह नई शिक्षा पद्धति किसी कार्य में दक्ष करने की अपेक्षा रटने की प्रवृति पर बल देती है, जिसके कारण विद्यार्थियों की तर्क व मनन शक्ति का विकास अवरुद्ध हो जाता है। दूसरा विद्यालय स्तर पर ही विद्यार्थियों में हीन भावना उत्पन्न् हो जाती

है। विद्यालय में शुल्क के आधार पर सुविधाओं में इतना अधिक अंतर होता है कि प्रत्येक विद्यार्थी वहां शिक्षा ग्रहण करने में सक्षम नहीं होता है। यहीं से उसमें हीनता की भावना घर कर जाती है। वर्तमान में प्रचलित शिक्षा पद्धति आध्यात्मिक व बौद्धिक विकास की अपेक्षा भौतिकतावाद को बढ़ावा देने वाली है इसलिए आज का युवा वर्ग जब शिक्षित हो जाता है तो वह समाज हित में या चरित्र निर्माण के लिए इसका उपयोग नही करता बल्कि उसका उद्देश्य नौकरी प्राप्त करके अधिक से अधिक धन कमाना है। ऐसी शिक्षा पद्धति प्रेमचंद जी के समय में भी विद्यमान थी। कर्म भूमि उपन्यास में प्रेमचंद जी ने विद्यालयों द्वारा फीस देरी से देने पर जुर्माना लगाने के तरीके को देखकर विद्यालयों को जुर्मानालय का नाम दिया है। इस उपन्यास में वे कहते हैं-"कचहरी में पैसे का राज है, हमारे स्कूलों में भी पैसे का राज है, उससे कहीं कठोर, कहीं निर्दय। देर में आइये तो जुर्माना; न आइये तो जुर्माना; सबक न याद हो तो जुर्माना; किताबें न खरीद सकिए तो जुर्माना; कोई अपराध हो जाए तो जुर्माना; शिक्षालय क्या है, जुर्मानालय है। यही हमारी पश्चिमी शिक्षा का आदर्श है, जिसकी तारीफों के पुल बांधे जाते हैं। यदि ऐसे शिक्षालयों से पैसे पर जान देने वाले, पैसे के लिए गरीबों का गला काटने वाले, पैसे के लिए अपनी आत्मा को बेच देने वाले छात्र निकलते हैं तो आश्चर्य क्या है? 2विद्यालयों की यह प्रवृति आज भी ज्यों की त्यों मिलती है। वर्तमान शिक्षा पद्धति में गुरु का वह सम्मानजनक स्थान अब देखने को नहीं मिलता है। नवीन शिक्षा पद्धति से प्रभावित विद्यार्थी स्वार्थी व संस्कार विहीन होते

जा रहे हैं। विद्यार्थियों की अनुशासनहीनता से संबंधित समाचार आए दिन समाचार पत्रों में प्रकाशित होते रहते हैं।

अतः कहा जा सकता है कि प्रेमचंद जी द्वारा रचित साहित्य में शिक्षा पद्धति से संबंधित जो विचार व्यक्त किए गए हैं वे विचार वर्तमान में भी उतने ही सार्थक हैं। उनके द्वारा वर्णित शिक्षा संबंधी कमियां आज भी विद्यमान है। वर्तमान में प्रचलित शिक्षा पद्धति में युवा वर्ग में कर्तव्यपरायणता, कुशलता, व्यावहारिकता, कठिन परिश्रम व सहनशीलता जैसे गुणों को विकसित करने की क्षमता प्राचीन कालीन शिक्षा पद्धति की अपेक्षा कम है।

वर्तमान समाज में व्याप्त समस्याओं में रिश्वतखोरी की समस्या भी अत्यधिक प्रमुख समस्या है। यह प्रवृत्ति समाज में दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है व समाज को खोखला कर रही है। साधारण से साधारण व्यक्ति से लेकर उच्च वर्ग के अधिकारी तक सभी इसमें लिप्त है। समाचार पत्रों में प्रतिदिन रिश्वतखोरी से संबंधित घटनाओं का जिक्र अवश्य होता है।

"हैफेड के जी.एम समेत तीन अधिकारी रिश्वत के रु 12.52 लाख के साथ अरेस्ट।"[3] यह समस्या कम होने की अपेक्षा दिन प्रतिदिन और अधिक बढ़ती जा रही है। रिश्वतखोरी को एक अधिकार समझा जाने लगा है। प्रेमचंद युगीन समाज में भी यह प्रवृति विद्यमान थी। उन्होंने अपनी रचनाओं में उसका सजीव चित्रण किया है। उन्होने स्पष्ट किया है कि किस प्रकार रिश्वत से कठिन से कठिन कार्य भी सरलता से हो जाते हैं "मैदानी बहादुरी का तो अब जमाना रहा

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 05, May- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

है न मौका। कितनी होशियारी से ठाकुर ने थानेदार को एक खास मुकदमे में रिश्वत देदी और साफ निकल गया।"[4]

न केवल व्यक्ति की स्वयं की प्रकृति बल्कि समाज व पारिवारिक सदस्य भी इस प्रवृति को समाप्त करने के स्थान पर प्रोत्साहन देते हैं। इसका जीवंत उदाहरण 'नमक का दरोगा' कहानी में वंशीधर के पिता है। जब बंशीधर नौकरी की तलाश में जाते हैं तो उनके पिता उनको समझाते हुए कहते हैं "बेटा नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना, यह तो पीर का मजार है। निगाह चढ़ावे और चादर पर रखनी चाहिए। ऐसा काम ढूंढना जहां कुछ ऊपरी आय हो। मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चांद है जो एक दिन दिखाई देता है और घटते घटते लुप्त हो जाता है। ऊपरी आय बहता हुआ स्त्रोत है जिससे सदैव प्यास बुझती है।"[5]

प्रेमचंद जी द्वारा वर्णित रिश्वतखोरी के प्रसंग वर्तमान समय में किसी भी सरकारी विभाग में देखे जा सकते हैं जो की प्रेमचंद जी के साहित्य की आधुनिक समाज में सार्थकता को सिद्ध करने के लिए पर्याप्त हैं। रिश्वतखोरी के आरोप में प्रतिदिन अनेक कर्मचारियों के विरुद्ध शिकायतें दर्ज की जाती हैं।

आज हम एक शिक्षित व सभ्य समाज के नागरिक हैं परंतु फिर भी दहेज प्रथा एक ऐसी प्रथा है जो समाज में घटने की अपेक्षा बढ़ती जा रही है। यद्यपि स्वतंत्रता के पश्चात शिक्षा का प्रचार प्रसार हुआ है। लड़कियों को शिक्षित करने की प्रवृति भी समाज में विकसित हुई है। अनेक शिक्षण संस्थानों की स्थापना की

गई है। लड़कियों ने भी शिक्षा के क्षेत्र में नए-नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। आज वे किसी भी क्षेत्र में पीछे नही हैं परंतु फिर भी दहेज प्रथा रूपी समस्या सुरसा के समान मुंह खोले हमारे सामने खड़ी है। यह प्रथा कम होने के स्थान पर विकराल रूप धारण करती जा रही है शिक्षित-अशिक्षित, अमीर-गरीब सभी इस समस्या से प्रभावित हैं। जितने बड़े पद पर लड़का आसीन है उसके लिए उतने ही अधिक दहेज की मांग बढ़ जाती है। केवल एक बार दहेज देने से ही समस्या का समाधान नही होता है बल्कि यह एक आजीवन समस्या है। दहेज के लालची लोगों की मांग दिन प्रतिदिन बढ़ती जाती है। दहेज देने कि क्षमता न होते हुए भी माता-पिता को कर्ज आदि लेकर दहेज का प्रबंध करना पड़ता है और इस कर्ज से वे जीवन भर भी उऋण नहीं हो पाते हैं या फिर उन्हें अयोग्य वर के साथ अपनी बेटी का विवाह करना पड़ता है। इस दहेज प्रथा रूपी घिनौनी परंपरा के कारण रूपवती, सीलवान, योग्य, शिक्षित लड़कियों का जीवन नर्क बनकर रह जाता है। प्रेमचंद जी ने अपने साहित्य के माध्यम से इस समस्या को उठाया है व इसके कुपरिणाम को उजागर करने का प्रयास किया है। 'निर्मला' उपन्यास में प्रेमचंद ने दिखाया है कि किस प्रकार धन के अभाव में लड़की के गुणों का भी कोई मूल्य नहीं होता। "अब अच्छे घर की जरूरत नहीं थी। अच्छे वर की जरूरत नहीं थी। अब अभागिन को अच्छा घर कहां से मिलता।"[6]

एक स्थानपर प्रेमचंद जी स्पष्ट करते हैं कि किस प्रकार लड़के की योग्यता के अनुसार दहेज तय किया जाता है। "लड़का पढ़ा तो बी.ए.तक है, पर उसी छापेखाने में काम करता है, उमर अठारह साल की होगी। घर में प्रेस के

सिवाय कोई और जायदाद नहीं है, मगर किसी का कर्ज सर पर नहीं। खानदान न बहुत अच्छा है, न बहुत बुरा। पर लड़का बहुत सुंदर और सच्चरित्र है। मगर एक हजार से कम में मामला तय न होगा। मांगते तो वह तीन हजार हैं।"[7]

न केवल समाज बल्कि स्वयं शिक्षित युवक व युवतियां भी इस प्रथा को बढ़ा रहे हैं। समाचार पत्र आदि में दहेज के कारण तलाक, लङकियों पर अत्याचार व उनकी हत्या संबंधी समाचार हम समाचारपत्रों में पढ़ते रहते हैं। 'सेवा सदन 'उपन्यास में प्रेमचंद जी ने दिखाया है कि किस प्रकार शिक्षित समाज भी इस रोग से अछूता नहीं है। दहेज प्रथा न केवल स्वयं एक समस्या है अपितु यह अनमेल विवाह, भ्रूण हत्या, घूसखोरी व वेश्यावर्ती जैसी अनेक बुराइयों की जननी भी है। प्रेमचंद जी ने इस समस्या व इसके प्रभाव का वर्णन अपने साहित्य में प्रभावशाली ढ़ंग से किया है। जो कि वर्तमान समाज के लिए एक आदर्श सिद्ध हो सकता है।

जाति प्रथा की समस्या भी हमारे देश की विकट समस्या है।यद्यपि यह जाति विभाजन प्राचीन काल से चला आ रहा है परंतु उस समय यह विभाजन किसी प्रकार के भेदभाव के आधार पर नहीं बल्कि कार्य के आधार पर किया गया था। परंतु कालांतर में इसमें अनेक दोष आते गए। इसने मानव- मानव के मध्य में शत्रुता की भावना को बढ़ा दिया। चुनाव में जीत प्राप्त करने के लिए जातिवाद को आधार बनाया जाता है। परिवर्तित होते समय व शिक्षा के प्रचार प्रसार से समाज में जागरूकता आई है जिसके कारण जात-पात और छुआछूत

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 05, May- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

जैसी बुराइयों में कुछ कमी आई है। हमारे संविधान में भी यह प्रावधान किया गया है कि किसी व्यक्ति के साथ जाति आदि के आधार पर भेदभाव नहीं किया जा सकता संविधान के अनुच्छेद 17 के अनुसार अस्पृश्यता को समाप्त कर दिया गया है। शिक्षित युवा वर्ग की सोच इस विषय में परिवर्तित हुई है परंतु फिर भी यह समस्या अशिक्षित वर्ग व पिछड़े क्षेत्रो में अभी भी विद्यमान है। जात-पात के आधार पर भेदभाव किया जाता है व सार्वजनिक स्थानों पर सभी को जाने की अनुमति नहीं दी जाती है। प्रेमचंद जी के समय भी यह समस्या विद्यमान थी। 'ठाकुर का कुआं' नामक कहानी में जब गंगी जोखू के लिए ठाकुर के कुएं से पानी लाना चाहती है तो जोखू कहता है " हाथ पांव तुडवा आएगी और कुछ न होगा। बैठ चुपके से। ब्राह्मण देवता आशीर्वाद देंगे, ठाकुर लाठी मारेंगे, साहू जी एक के पांच लेंगे। गरीबों का दर्द कौन समझता है! हम तो मर भी जाते हैं तो कोई दुआर पर झांकने नहीं आता, कंधा देना तो बड़ी बात है। ऐसे लोग कुएं से पानी भरने देंगे?"[8]

किसी व्यक्ति द्वारा दिए गए उपदेशों या भाषणों से उसकी वास्तविक विचारधारा से हम परिचित नहीं हो सकते हैं। उसके द्वारा किए गए कर्म ही उसके चरित्र के वास्तविक परिचायक होते हैं। मनुष्य की कथनी और करनी में अंतर उसके दोगलेपन को दर्शाने के लिए पर्याप्त होती है। समाज में ऐसे बहुतायत उदाहरण देखने को मिलते हैं। संकुचित विचारधारा से ग्रस्त व दुराचारी लोग भी स्वयं को पवित्र व समाजसेवी होने का ढोंग रचते हैं। अपने द्वारा किए गए प्रत्येक कार्य का ढिंढोरा पीटते हैं, इसके पीछे उनका वास्तविक

उद्देश्य समाज में अपनी पहचान बनाना होता है, लोगों की भलाई करना नहीं। ऐसे दोगले लोग प्रेमचंद के समय में भी मौजूद थे, जो स्वयं को समाज में ऊंचा सिद्ध करना चाहते थे परंतु उनके द्वारा किए गए कार्य अपवित्र व असामाजिक होते थे। प्रेमचंद जी ने ठाकुर का कुआं कहानी में इन लोगां के कुकृत्यों को उजागर करने का सफल प्रयास किया है। गंगी के माध्यम से लेखक कहते हैं "हम क्यों नीच हैं ओर यह लोग क्यों ऊंच हैं? इसलिए कि ये लोग गले में तागा डाल लेते हैं? यहां तो जितने हैं, एक से एक छंटे हैं? चोरी ये करें, जाल फरेब ये करें, झूठे मुकदमे ये करें। अभी इस ठाकुर ने तो उसी दिन बेचारे गङरिये की एक भेड़ चुरा ली थी और बाद को मार कर खा गया। इन्हीं पंडित जी के घर में तो बारह मास जुआ होता है। यही साहू जी तो घी में तेल मिलाकर बेचते हैं। काम करा लेते हैं मजूरी देते नानी मरती है।"[9]

दिखावे व आडंबर की यह प्रवृति वर्तमान समाज में भी ज्यों की त्यों विद्यमान है। केवल यह दिखावे की प्रवृति ही नहीं बल्कि और भी बहुत सी समस्याएं या प्रवृतियां ऐसी हैं जो प्रेमचंद युगीन समाज से काफी मेल खाती है" जिन मुद्दों को प्रेमचंद ने उठाया था, जिनको लेकर उन्होंने साहित्य की रचना की थी वह आज भी संगत हैं। उनकी वस्तुनिष्ठ दृष्टि आज भी हमें सोचने पर बाध्य करती है, भले ही वह सांप्रदायिकता का मुद्दा हो, न्याय संगत सामाजिक आर्थिक पद्धति का, समाज के पिछड़े हुए वर्गों का, जात-पात अथवा स्त्रियों की समस्या हो"[10]

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि प्रेमचंद युगीन समाज में विद्यमान समस्याएं व प्रवृतियां आज बदलते परिवेश, आधुनिकता व शिक्षा के प्रचार-प्रसार के बाद भी समाज में न केवल विद्यमान हैं बल्कि ये सभी समस्याएं या प्रवृतियां पहले से भी अधिक भयावह रूप में हमारे सामने खड़ी हैं। प्रेमचंद जी ने अपने साहित्य के माध्यम से इन सभी समस्याओं व प्रवृतियों के विषय में समाज को जागरूक करके उनका निराकरण करने का भी प्रयास किया है। इसलिए प्रेमचंद जी की रचनाएं आज भी हमारे लिए उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी प्रेमचंद युगीन समाज में थी। उनकी रचनाएं आज भी अपने आप को वर्तमान मूल्य से जोड़ती हुई दिखाई देती हैं। बदलते परिवेश व बदलते मानवीय संबंधो के बाद भी प्रेमचंद जी के साहित्य की सार्थकता वर्तमान समय में भी निर्विवाद है।

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 05, May- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

संदर्भ

1. प्रतिनिधि कहानियां – प्रेमचन्द — पृष्ठ - भूमिका
2. कर्मभूमि (उपन्यास)– प्रेमचन्द — पृष्ठ - 5
3. 2 दिसम्बर 2023 दैनिक भास्कर समाचार पत्र — पृष्ठ - मुख्य पृष्ठ
4. प्रतिनिधि कहानियां – प्रेमचंद — पृष्ठ - 95
5. प्रतिनिधि कहानियां – प्रेमचंद — पृष्ठ - 48
6. निर्मला (उपन्यास) – प्रेमचंद — पृष्ठ - 29
7. निर्मला (उपन्यास) – प्रेमचंद — पृष्ठ - 30
8. प्रतिनिधि कहानियां – प्रेमचंद — पृष्ठ - 94
9. प्रतिनिधि कहानियां – प्रेमचंद — पृष्ठ - 95
10. प्रतिनिधि कहानियां – प्रेमचंद — पृष्ठ – भूमिका